पश्चिमी देशों में ज्योतिष पर वैज्ञानिक अनुसंधान

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

पश्चिमी देशों में ज्योतिष पर शोध केवल सांख्यिकीय या प्रयोगात्मक स्तर तक सीमित नहीं रहा है. कई विद्वानों ने ज्योतिष को सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी अध्ययन किया है. ब्रिटेन के प्रसिद्ध विद्वान निकोलस कैम्पियन ने ज्योतिष के इतिहास और सांस्कृतिक महत्व पर विस्तृत अध्ययन किया है. उन्होंने यह दिखाया कि ज्योतिष केवल एक भविष्यवाणी की प्रणाली नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता के सांस्कृतिक और बौद्धिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है. उनकी पुस्तक ए हिस्ट्री ऑफ वेस्टर्न एस्ट्रोलॉजी इस विषय पर एक महत्वपूर्ण अकादमिक ग्रंथ माना जाता है.

ज्योतिष मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन ज्ञान परंपराओं में से एक है, जिसकी जड़ें प्राचीन मेसोपोटामिया, मिस्र, भारत और यूनान की सभ्यताओं तक पहुँचती हैं. यद्यपि आधुनिक युग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या के लिए वैज्ञानिक पद्धति को प्रमुख स्थान प्रदान किया है, फिर भी ज्योतिष के प्रति मानव समाज की रुचि समाप्त नहीं हुई है. विशेष रूप से पश्चिमी देशों में पिछले लगभग सौ वर्षों के दौरान ज्योतिष को वैज्ञानिक दृष्टि से परखने के अनेक प्रयास किए गए हैं. इन प्रयासों का उद्देश्य यह समझना था कि क्या ज्योतिषीय सिद्धांतों में कोई सांख्यिकीय या अनुभवजन्य आधार है, अथवा यह केवल सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक विश्वास का परिणाम है.

पश्चिमी वैज्ञानिक अनुसंधानों की विशेषता यह रही है कि उन्होंने ज्योतिष को न तो पूर्णत: स्वीकार किया और न ही तुरंत अस्वीकार किया, बल्कि उसे वैज्ञानिक परीक्षण के मानकों पर परखने का प्रयास किया. इन शोधों में सांख्यिकीय विश्लेषण, मनोवैज्ञानिक परीक्षण, नियंत्रित प्रयोग और ऐतिहासिक अध्ययन जैसे विविध तरीकों का उपयोग किया गया. परिणामस्वरूप ज्योतिष के संबंध में एक विस्तृत अकादमिक विमर्श विकसित हुआ, जिसमें समर्थक और आलोचक दोनों प्रकार के दृष्टिकोण सामने आए. इस अध्याय में पश्चिमी देशों में हुए प्रमुख वैज्ञानिक अनुसंधानों का विवेचन किया जाएगा और यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि इन अध्ययनों से ज्योतिष के संबंध में क्या निष्कर्ष निकलते हैं.

बीसवीं शताब्दी के मध्य में फ्रांस के प्रसिद्ध सांख्यिकीविद् मिशेल गॉक्लिन ने ज्योतिष के वैज्ञानिक परीक्षण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयास किया. गॉक्लिन मूलत: एक मनोवैज्ञानिक और सांख्यिकीय शोधकर्ता थे, जिनकी रुचि यह जानने में थी कि क्या ग्रहों की स्थिति और मानव व्यक्तित्व के बीच कोई सांख्यिकीय संबंध पाया जा सकता है. उन्होंने हजारों प्रसिद्ध व्यक्तियों की जन्म कुंडलियों का अध्ययन किया और उनके पेशे, उपलब्धियों तथा जीवन परिस्थितियों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया. अपने अध्ययन में उन्होंने विशेष रूप से यह देखा कि क्या कुछ ग्रहों की स्थिति विशेष पेशों से अधिक संबंधित होती है. उनके शोध का सबसे प्रसिद्ध निष्कर्ष मार्स इफेक्ट के नाम से जाना जाता है.

गॉक्लिन ने पाया कि कई प्रसिद्ध खिलाड़ियों की जन्म कुंडलियों में मंगल ग्रह अक्सर उस समय के आसपास स्थित होता था जिसे उन्होंने उदय क्षेत्र या मिडहेवन क्षेत्र कहा. यह परिणाम उनके लिए आश्चर्यजनक था, क्योंकि यह पारंपरिक ज्योतिषीय मान्यता के अनुरूप था कि मंगल ग्रह ऊर्जा, साहस और शारीरिक क्षमता का प्रतीक माना जाता है. गॉक्लिन के अनुसार, यह सांख्यिकीय संबंध संयोग मात्र नहीं हो सकता था और इसलिए इसे गंभीरता से अध्ययन की आवश्यकता थी. उनके इस निष्कर्ष ने ज्योतिष और विज्ञान के बीच एक नई बहस को जन्म दिया. कुछ वैज्ञानिकों ने इसे ज्योतिष के समर्थन में महत्वपूर्ण प्रमाण माना, जबकि अन्य ने इसकी पद्धति और डेटा के चयन पर प्रश्न उठाए.

गॉक्लिन के शोध का महत्व इस बात में भी निहित है कि उन्होंने ज्योतिषीय दावों की जाँच करने के लिए वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग किया. उन्होंने बड़े पैमाने पर डेटा एकत्र किया और उसका सांख्यिकीय विश्लेषण किया. इस प्रकार उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया कि ज्योतिषीय सिद्धांतों को भी वैज्ञानिक परीक्षण के दायरे में लाया जा सकता है. यद्यपि उनके निष्कर्षों को लेकर विवाद बना रहा, फिर भी उनका कार्य ज्योतिष के वैज्ञानिक अध्ययन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जाता है.

इसके बाद कई अन्य शोधकर्ताओं ने भी ज्योतिष की वैज्ञानिक जाँच करने का प्रयास किया. इनमें ऑस्ट्रेलिया के शोधकर्ता जॉफ्री डीन का नाम उल्लेखनीय है. जॉफ्री डीन ने ज्योतिष पर किए गए अनेक अध्ययनों का विश्लेषण किया और यह देखने का प्रयास किया कि क्या ज्योतिषीय भविष्यवाणियाँ वास्तव में सटीक सिद्ध होती हैं. उन्होंने ज्योतिष के विभिन्न पहलुओं पर किए गए शोधों की समीक्षा करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि अधिकांश मामलों में ज्योतिषीय भविष्यवाणियों की सटीकता वैज्ञानिक परीक्षणों में प्रमाणित नहीं हो पाती. हालांकि उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि ज्योतिष का मनोवैज्ञानिक प्रभाव महत्वपूर्ण हो सकता है, क्योंकि यह लोगों को अपने जीवन और व्यक्तित्व को समझने का एक ढाँचा प्रदान करता है.

जॉफ्री डीन का कार्य ज्योतिष के आलोचनात्मक अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है. उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया कि ज्योतिष को वैज्ञानिक दृष्टि से परखने के लिए कठोर पद्धतियों की आवश्यकता होती है. उनके अनुसार यदि ज्योतिषीय सिद्धांतों को वैज्ञानिक मान्यता प्राप्त करनी है तो उन्हें नियंत्रित प्रयोगों और सांख्यिकीय परीक्षणों में सफल सिद्ध होना होगा. इस दृष्टिकोण ने ज्योतिष के समर्थकों और आलोचकों के बीच एक गहन बहस को जन्म दिया, जो आज भी जारी है.

ज्योतिष के वैज्ञानिक परीक्षण का एक और महत्वपूर्ण प्रयास अमेरिकी भौतिक विज्ञानी शॉन कार्लसन द्वारा किया गया. उन्होंने 1985 में एक प्रसिद्ध प्रयोग किया जिसे डबल ब्लाइंड ज्योतिष परीक्षण के नाम से जाना जाता है. इस प्रयोग का उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या पेशेवर ज्योतिषी किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली के आधार पर उसके व्यक्तित्व का सही वर्णन कर सकते हैं. इस प्रयोग में ज्योतिषियों को कई जन्म कुंडलियाँ दी गईं और उनसे कहा गया कि वे उन कुंडलियों को संबंधित व्यक्तियों के व्यक्तित्व प्रोफाइल से मिलाएँ.

कार्लसन के प्रयोग की विशेषता यह थी कि इसमें डबल ब्लाइंड पद्धति का उपयोग किया गया था, जिसका अर्थ है कि न तो ज्योतिषियों को यह पता था कि कौन-सी कुंडली किस व्यक्ति की है और न ही प्रयोग संचालकों को पहले से यह जानकारी थी कि कौन-सा मिलान सही है. इस प्रकार प्रयोग को यथासंभव निष्पक्ष बनाने का प्रयास किया गया. प्रयोग के परिणामों के अनुसार ज्योतिषियों का प्रदर्शन संयोग से बेहतर नहीं था. इन निष्कर्षों को प्रतिष्ठित वैज्ञानिक पत्रिका नेचर में प्रकाशित किया गया, जिससे यह अध्ययन अत्यंत चर्चित हो गया.

19 मार्च से शुरू चैत्र नवरात्रि, कब करें घट स्थापना

19 मार्च से शुरू होकर 27 मार्च तक चलेगी चैत्र नवरात्रि, पहले दिन शुभ मुहूर्त में होगी कलश स्थापना. हिंदू धर्म में चैत्र नवरात्रि का पर्व अत्यंत पवित्र और महत्वपूर्ण माना जाता है. यह नौ दिनों तक चलने वाला उत्सव मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की आराधना के लिए समर्पित होता है. इन दिनों में भक्त व्रत रखते हैं, पूजा-पाठ करते हैं और देवी मां से सुख-समृद्धि और शक्ति की कामना करते हैं. इस बार नवरात्रि पूरे नौ दिनों की रहेगी, जिसमें मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की विशेष पूजा की जाएगी. नवरात्रि के पहले दिन घट स्थापना या कलश स्थापना का विशेष महत्व होता है. इसे देवी शक्ति को घर में आमंत्रित करने का प्रतीक माना जाता है. इस दिन शुभ मुहूर्त में कलश स्थापित कर देवी मां की पूजा की जाती है और नवरात्रि के व्रत का संकल्प लिया जाता है. ऐसे में अगर आप भी इस साल चैत्र नवरात्रि का व्रत रखने या घर में कलश स्थापना करने की योजना बना रहे हैं, तो इसकी सही तिथि और शुभ मुहूर्त जानना बेहद जरूरी है. हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से चैत्र नवरात्रि की शुरुआत होती है. यह पर्व मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा और साधना का विशेष समय माना जाता है.

नवरात्रि के पहले दिन घट स्थापना या कलश स्थापना की परंपरा निभाई जाती है. धार्मिक मान्यता है कि कलश स्थापना के साथ ही घर में देवी शक्ति का आवाहन होता है और पूरे नौ दिनों तक देवी मां की विशेष पूजा की जाती है. इसलिए इस दिन शुभ मुहूर्त में कलश स्थापित करना बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है. नवरात्रि के नौ दिनों में मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है, जिन्हें नवदुर्गा कहा जाता है. पहले दिन मां शैलपुत्री की पूजा होती है. इसके बाद मां ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और अंत में सिद्धिदात्री की आराधना की जाती है.

पूजा विधि के अनुसार नवरात्रि के पहले दिन घर के पूजा स्थान को साफ करके लकड़ी की चौकी पर लाल कपड़ा बिछाया जाता है. इसके बाद मिट्टी के पात्र में जौ बोकर उस पर जल से भरा कलश स्थापित किया जाता है. कलश के ऊपर नारियल और आम के पत्ते रखे जाते हैं. इसके बाद देवी मां की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित कर रोली, अक्षत, फूल, धूप और दीप से पूजा की जाती है. धार्मिक मान्यता है कि नवरात्रि के इन नौ दिनों में देवी दुर्गा की सच्चे मन से पूजा करने से जीवन में सुख-समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का आगमन होता है. साथ ही यह समय आध्यात्मिक साधना और नए कार्यों की शुरुआत के लिए भी बेहद शुभ माना जाता है.

पंचांग के अनुसार 19 मार्च 2026 को कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त सुबह 6 बजकर 10 मिनट से 8 बजकर 35 मिनट तक रहेगा. इसके अलावा अभिजीत मुहूर्त में भी कलश स्थापना की जा सकती है, जो दोपहर 12 बजकर 5 मिनट से 12 बजकर 53 मिनट तक रहेगा.

चैत्र नवरात्रि में जाएं इन शक्तिपीठों में, पूरी होगी इच्छा

19 मार्च से शुरू हो रहे चैत्र नवरात्रि में देशभर के इन प्रसिद्ध देवी मंदिरों में दर्शन करना बेहद शुभ माना जाता है. हिंदू धर्म में चैत्र नवरात्रि का पर्व बेहद पवित्र और महत्वपूर्ण माना जाता है. यह नौ दिनों तक चलने वाला उत्सव मां दुर्गा के नौ रूपों की आराधना का पर्व है, जिसमें भक्त व्रत रखते हैं, पूजा-अर्चना करते हैं और देवी मां से सुख-समृद्धि की कामना करते हैं. आप भी इस बार नवरात्रि में देवी मां के दर्शन करने के लिए किसी खास तीर्थ स्थल पर जाने की योजना बना रहे हैं, तो भारत में कई ऐसे प्रसिद्ध और चमत्कारी मंदिर हैं जहां दर्शन करना बेहद फलदायी माना जाता है. देशभर में कई ऐसे प्रसिद्ध शक्तिपीठ और मंदिर हैं, जहां नवरात्रि के समय लाखों श्रद्धालु माता के दर्शन के लिए पहुंचते हैं. इन मंदिरों से जुड़ी धार्मिक मान्यताएं और चमत्कारी कथाएं भक्तों की आस्था को और गहरा बनाती हैं. मध्य प्रदेश के सतना जिले में स्थित मैहर देवी मंदिर माता शारदा का प्रसिद्ध धाम है. विंध्य पर्वत की ऊंची पहाड़ी पर बने इस मंदिर तक पहुंचने के लिए करीब एक हजार सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं. मान्यता है कि यहां आज भी वीर योद्धा आल्हा और ऊदल अदृश्य रूप में सबसे पहले माता की पूजा करने आते हैं. इसी तरह मध्य प्रदेश का बगलामुखी माता मंदिर भी शक्तिपीठों में खास स्थान रखता है.

हिंदू नववर्ष की शुरुआत : गुढी पाडवा का महत्व

भारत में विभिन्न क्षेत्रों में नए साल की शुरुआत अलग-अलग परंपराओं के साथ होती है. महाराष्ट्र में हिंदू नववर्ष की शुरुआत गुढी पाडवा के पर्व से मानी जाती है. यह त्योहार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को मनाया जाता है और इसे नई शुरुआत, विजय और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है.

गुढी पाडवा के दिन लोग अपने घरों के बाहर गुढी स्थापित करते हैं. यह एक विशेष ध्वज की तरह होता है, जिसे बांस की लंबी डंडी पर रेशमी कपड़ा, नीम की पत्तियां, साखर की माला और ऊपर तांबे या चांदी का कलश लगाकर तैयार किया जाता है. मान्यता है कि गुढी घर के बाहर लगाने से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश होता है और नकारात्मक शक्तियां दूर रहती हैं.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस पर्व के पीछे कई पौराणिक कथाएं जुड़ी हुई हैं. एक मान्यता यह है कि भगवान राम ने रावण का वध करने के बाद जब अयोध्या वापसी की, तब लोगों ने उनके स्वागत में गुढी स्थापित की थी. वहीं कुछ धर्मग्रंथों में यह भी उल्लेख मिलता है कि इसी दिन ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना शुरू की थी.

इसी वजह से गुढी पाडवा को नए साल की शुरुआत और शुभ कार्यों के लिए अत्यंत मंगलकारी दिन माना जाता है. गुढी पाडवा महाराष्ट्र का एक प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक पर्व है, जिसे हिंदू नववर्ष की शुरुआत के रूप में मनाया जाता है.

एक अन्य धार्मिक मान्यता के अनुसार इसी दिन सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा ने संसार की रचना की शुरुआत की थी. इसलिए इस दिन को सृष्टि के आरंभ का दिन भी माना जाता है.

यह पर्व हर साल चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को आता है और इसे नई शुरुआत, समृद्धि और विजय का प्रतीक माना जाता है. इस दिन लोग अपने घरों के बाहर गुढी स्थापित कर भगवान की पूजा करते हैं और नए साल का स्वागत करते हैं. गुढी पाडवा से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध पौराणिक कथा भगवान राम से संबंधित है. मान्यता है कि जब भगवान राम ने रावण का वध किया और 14 वर्षों का वनवास समाप्त करके अयोध्या लौटे, तब अयोध्या के लोगों ने उनके स्वागत में घर-घर गुढी स्थापित की थी. यह गुढी उनके विजय और धर्म की जीत का प्रतीक मानी गई. तभी से इस परंपरा को हर साल गुढी पाडवा के रूप में मनाया जाने लगा.

तिजोरी में ये चीजें रखें, बढ़ेगा धन लाभ

भारतीय संस्कृति में तिजोरी को केवल पैसे रखने की जगह नहीं माना जाता, बल्कि इसे घर की समृद्धि और धन का प्रतीक भी समझा जाता है. वास्तु शास्त्र और पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार यदि तिजोरी में कुछ खास वस्तुएँ रखी जाएँ तो इससे घर में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है और धन लाभ होने की संभावना भी बढ़ती है. कई लोग आज भी इन मान्यताओं को मानते हैं और अपनी तिजोरी में शुभ वस्तुएँ रखते हैं.

सबसे पहले बात करें हल्दी की गांठ की. हल्दी को हिंदू धर्म में बेहद शुभ माना जाता है. ऐसा माना जाता है कि तिजोरी में हल्दी की एक छोटी गांठ रखने से मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है और आर्थिक स्थिति मजबूत होती है. अक्सर लोग इसे लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी में रखते हैं. इसके अलावा चांदी का सिक्का भी बहुत शुभ माना जाता है. चांदी को शुद्धता और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है. यदि तिजोरी में चांदी का सिक्का रखा जाए तो यह धन वृद्धि का संकेत माना जाता है. कई लोग इस सिक्के पर लक्ष्मी-गणेश की आकृति वाला सिक्का रखना पसंद करते हैं. वास्तु के अनुसार कमलगट्टा भी तिजोरी में रखना लाभकारी माना जाता है. कमलगट्टा को देवी लक्ष्मी से जुड़ा हुआ माना जाता है. मान्यता है कि इसे तिजोरी में रखने से घर में कभी भी धन की कमी नहीं होती और आर्थिक स्थिरता बनी रहती है. इसके साथ ही लाल कपड़ा भी तिजोरी में रखना शुभ माना जाता है. लाल रंग को ऊर्जा, शक्ति और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है. कई लोग तिजोरी में पैसे लाल कपड़े में बांधकर रखते हैं, जिससे धन का प्रवाह बना रहता है. इसके अलावा गोमती चक्र को भी तिजोरी में रखने की सलाह दी जाती है. गोमती चक्र को एक शुभ वस्तु माना जाता है और इसे धन आकर्षित करने वाला माना जाता है. कई धार्मिक मान्यताओं में कहा गया है कि इसे तिजोरी में रखने से नकारात्मक ऊर्जा दूर रहती है और घर में सुख-समृद्धि आती है.

खरमास में न करें ये काम, वरना शुभ फल नहीं मिलेगा

हिंदू धर्म में समय और ग्रहों की स्थिति को बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है. किसी भी शुभ कार्य से पहले मुहूर्त और ग्रह-नक्षत्रों का विचार करना परंपरा का हिस्सा है. इसी कड़ी में साल 2026 का पहला खरमास 15 मार्च से शुरू होने जा रहा है. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, यह वह अवधि होती है जब सूर्य एक विशेष राशि में प्रवेश करते हैं और इस दौरान मांगलिक कार्यों को टालने की सलाह दी जाती है. 15 मार्च को दोपहर 1 बजकर 8 मिनट पर सूर्य शनि की राशि कुंभ से निकलकर गुरु की राशि मीन में प्रवेश करेंगे.

इस परिवर्तन को मीन संक्रांति कहा जाता है और इसी के साथ खरमास का आरंभ हो जाएगा. लगभग एक महीने तक चलने वाली इस अवधि में विवाह, गृह प्रवेश, मुंडन, जनेऊ संस्कार और नए व्यापार जैसे शुभ कार्यों को वर्जित माना जाता है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, खरमास सांसारिक कार्यों की बजाय आध्यात्मिक साधना और दान-पुण्य के लिए अधिक शुभ माना जाता है. इस समय भगवान विष्णु की पूजा, सूर्य को अर्घ्य देना और जरूरतमंदों की सहायता करना विशेष फलदायी बताया गया है. खरमास का समापन 14 अप्रैल को मेष संक्रांति के साथ होगा, जिसके बाद फिर से शुभ कार्यों की शुरुआत हो सकेगी.

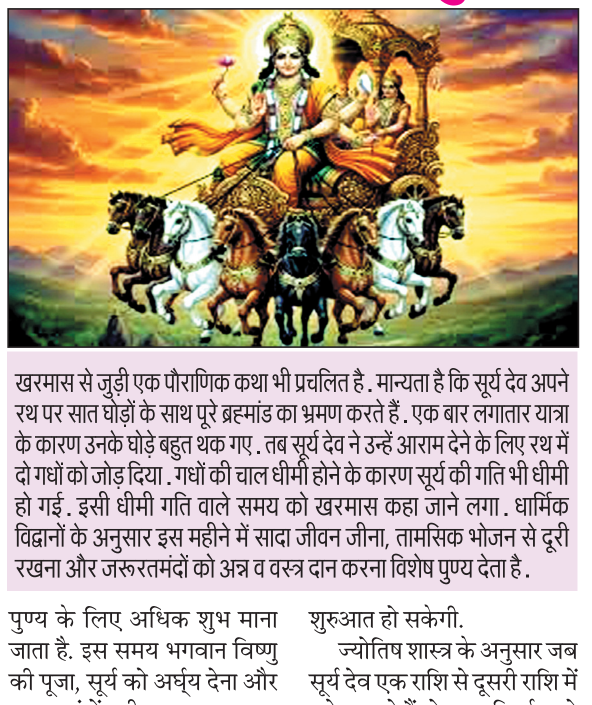

खरमास से जुड़ी एक पौराणिक कथा भी प्रचलित है. मान्यता है कि सूर्य देव अपने रथ पर सात घोड़ों के साथ पूरे ब्रह्मांड का भ्रमण करते हैं. एक बार लगातार यात्रा के कारण उनके घोड़े बहुत थक गए. तब सूर्य देव ने उन्हें आराम देने के लिए रथ में दो गधों को जोड़ दिया. गधों की चाल धीमी होने के कारण सूर्य की गति भी धीमी हो गई. इसी धीमी गति वाले समय को खरमास कहा जाने लगा. धार्मिक विद्वानों के अनुसार इस महीने में सादा जीवन जीना, तामसिक भोजन से दूरी रखना और जरूरतमंदों को अन्न व वस्त्र दान करना विशेष पुण्य देता है.

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जब सूर्य देव एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करते हैं तो उस परिवर्तन को संक्रांति कहा जाता है. 15 मार्च 2026 को सूर्य का गोचर कुंभ से मीन राशि में होगा. इसी संक्रांति के साथ साल का पहला खरमास शुरू हो जाएगा. यह अवधि लगभग एक महीने तक चलेगी और 14 अप्रैल को मेष संक्रांति के साथ समाप्त होगी. धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक, खरमास के दौरान विवाह, गृह प्रवेश, मुंडन, जनेऊ संस्कार और नए व्यवसाय की शुरुआत जैसे मांगलिक कार्य नहीं किए जाते.

ऐसा माना जाता है कि इस समय सूर्य का प्रभाव कमजोर रहता है, जिससे नए कार्यों में सफलता मिलने की संभावना कम होती है. इसलिए लोग इस दौरान बड़े फैसले और नए काम शुरू करने से बचते हैं. हालांकि खरमास को पूरी तरह अशुभ नहीं माना जाता. धर्मशास्त्रों में इसे आध्यात्मिक उन्नति का समय बताया गया है. इस दौरान पूजा-पाठ, व्रत, दान-पुण्य और मंत्र साधना करना अत्यंत फलदायी माना जाता है. सुबह जल्दी उठकर सूर्य देव को जल अर्पित करना और भगवान विष्णु की पूजा करने से जीवन में सकारात्मक ऊर्जा आने की मान्यता है.

राशिफल

15 से 21 मार्च 2026 तक

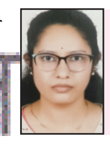

ज्योतिषाचार्य पंडित
प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य मीन राशि में, मंगल कुम्भ राशि में, वक्री बुध कुम्भ राशि में ता. 21 को 11/40 दिन से मार्गी, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र मीन राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा मकर कुम्भ मीन और मेष राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 15 को शुक्र रेवती नक्षत्र में आकर श्वेत वस्तु जैसे- कपास, कपूर, शक्कर, चांदी आदि में मंदी का योग बनेगा. बंगाल और आसाम में कहीं बूंदा-बांदी होगी, कहीं खण्ड वृष्टि हो सकती है. उत्तर भारत में वायु वेग के साथ तापमान बढ़ने लगेगा.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	15 मार्च को	सौर चैत्र मास आरम्भ, खरमास प्रारम्भ,
सोमवार	16 मार्च को	प्रदोष व्रत,
मंगलवार	17 मार्च को	शिवचर्तुदशी व्रत, वारूणी पर्व,
बुधवार	18 मार्च को	श्राद्ध अमावस्या,
गुरूवार	19 मार्च को	स्नानदान अमावस्या, चैत्र नवरात्रारम्भ कलश स्थापना, बैठकी, गुडी पडवा, घट स्थापना.
शुक्रवार	20 मार्च को	सिंघारा दोज,
शनिवार	21 मार्च को	मत्स्यावतार सौभाग्य सुंदरी तीज व्रत, गणगौर तीज, मनोरथ तृतीया

मेष

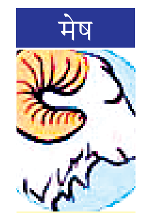

इस सप्ताह अच्छी तरह सोच विचार कर ही अपनी प्राथमिकतायें तय करेंगे, परस्पर विचारों का आदान प्रदान करने से अच्छी बात बन सकती है, अतिरिक्त जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पड़ेगा, विशिष्टजनों से आपकी प्रशंसा होगी, भूमि भवन घर खरीदी बिक्री फायदेमंद रहेंगे, सामाजिक सक्रियता बढ़ेगी, व्यापार एवं राजकीय कारणों से की गई यात्रा मे बेहतर परिणाम होंगे.

वृषभ

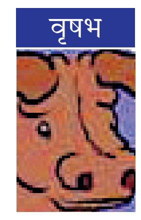

साझेदारों के साथ व्यक्तिगत संबंध भी मजबूत होंगे, काननी मामले में एवं प्रापर्टी संबंधी विवाद आसानी से सुलझ सकते हैं, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, नौकरी पेशा व्यक्तियों की पदोन्नति संभव है, कार्यक्षेत्र में आप संतुष्ट रहेंगे, अपने स्वास्थ्यपर विशेष ध्यान दें, घर में मांगलिक कार्य की योजना बनेगी, बुजुर्गो के स्वास्थ्य पर ध्यान दें.

मिथुन

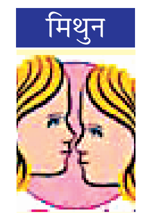

इस सप्ताह सोच समझकर ही आप आगे बढ़ना चाहेंगे, आप पूरे होश एवं जोश के साथ कार्य में जुट जायेंगे, भविष्य में लाभ की योजनाओं की शुरूआत हो सकती है, अनुसंधान एवं कला के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, उच्च पदस्थ लोगों के साथ सामूहिक कार्य में भाग लेंगे, जीवनसाथी और बच्चों को आपसे अपेक्षाएं बढ़ सकती हैं, सौहार्द्रपूर्ण माहौल रहेगा, नये संबंध बनेंगे.

कर्क

अपने मन में चल रहे अर्न्तद्वंद को दूर कर कार्य में जुट जाने का समय है, वरिष्ठों का सहयोग बना रहेगा, अपने स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति पर अत्याधिक खर्च करेंगे, व्यवसाय में किसी करीबी मित्र को साझेदार बना सकते हैं, अपने घर में आप निर्माण संबंधी कोई सुधार कर सकते हैं, सप्ताहान्त में स्वास्थ्य में गिरावट की संभावना है, श्रम उतना ही करें, जितना शरीर साथ दे.

सिंह

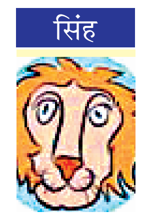

इस सप्ताह व्यापार यात्राऔर धार्मिक कार्यो में आपकी रूचि बढ़ेगी, सपफलता की ओर कदम बढ़ेंगे, कार्य पूर्ण करने में सहयोगी का रवैया आपके प्रति सहयोगात्मक रहेगा, जानपहचान का दायरा बढ़ेगा, आप किसी बडी योजना में शामिल हो सकते हैं, परन्तु यह आपकी कार्यक्षमता के अनुकूल नहीं होगा, आपको कड़ी मेहनत और योजनाबद्ध तरीके से सफलता मिलेगी.

कन्या

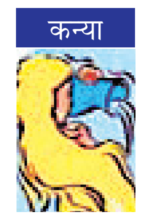

सप्ताह आपका काफी उतार चढ़ाव वाला रहेगा, कार्य की व्यस्तता रहेगी,अधिकारियों से तालमेल बनाकर आगे बढ़े, सामाजिक क्षेत्र में सक्रियता बढ़ेगी, व्यापार में कुछ नये साझेदारों को शामिल करने की कोशिश होगी, किसी करीबी मित्र रिश्तेदार का सहयोग मिलेगा, अविवाहितों को मनचाहा जीवनसाथी मिल सकता है, सप्ताह के अन्त में अतिविश्वास आपको संकट में डाल सकता है.

तुला

इस सप्ताह सामाजिक कार्यो में बढ़चढ़कर हिस्सा लेंगे, जिस कार्यमें आप हाथ डालेंगे,सफलता मिलेगी, वित्तीय स्थिति पहले से बेहतर होगी, परन्तु आप अवसरों को गंवा सकते हैं, कैरियर और सामाजिक स्थिति में सुधार होगा, नये वाहन की योजना बन सकती है, सप्ताहान्त में सोच समझकर और कार्यक्षमता के अनुरूप कार्य होगा, घरेलू वातावरण खुशनुमा रहेगा, मनोरंजक यात्रा होगी.

वृश्चिक

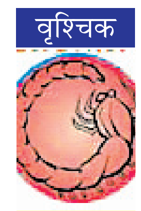

इस सप्ताह महत्वाकांक्षा बढ़ेगी, घरेलू मामलों में विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा, किसी पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, सप्ताह के प्रारंभ में महत्व के कार्य करने की बजाय रोजमर्रा की दिनचर्या ही निभाने का प्रयास करें, व्यवसाय में आप किसी अपरिचित पर अत्याधिक विश्वास न करें, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, बच्चों के लिये कुछ हद तक परेशान रह सकते हैं.

धनु

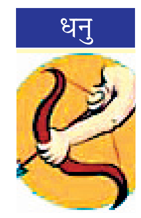

इस सप्ताह कार्यस्थल पर आपकी योग्यता और कार्य को उचित मान प्रतिष्ठा सम्मान मिलेगा, अपनी बात मनवाने के लिये संघर्ष करना पड़ेगा, यह सप्ताह कैरियर की दृष्टि से मनोवांछित साबित होगा, आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी, दाम्पत्य जीवन सुख समृद्धि का भाव कायम रहेगा, कारोबार में ईमानदारी से ध्यान दें, भौतिक सुख साधनों में रूचि बढ़ेगी, विरोधियों से सतर्क रहें.

मकर

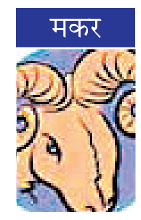

इस सप्ताह व्यापारिक और कैरियर की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहेगा, विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के साथ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त रहेंगे, बच्चों की भावनाओं का ध्यान रखें, सप्ताह के मध्य महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में विरोधियों से सतर्क रहें, किसी करीबी मित्र के साथ दूर दमकर की यात्रा पर जा सकते हैं, यात्रा के दौरान अनावश्यक खर्च से बचें.

कुम्भ

इस सप्ताह प्रगति की दिशा में आगे बढ़ेगे, अपनी योग्यता और सामर्थ्य का उपयोग सफलता पाने के लिये करेंगे, आपके व्यवहार और सोच में व्यापक बदलाव आ सकता है, जवृश्चिक जायजाद की खरीदी बिक्री और ऋष्ण के लेनदेन से लाभ होगा, अपने हित की रक्षा के लिये प्रयास करेंगे, जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

मीन

कार्यक्षेत्र में कैरियर में बड़ी सफलता मिलेगी, व्यवसायिक साझेदारों में सावधानी रखें, महत्पूर्ण निर्णय होंगे, जीवनसाथी का सहयोग कार्यक्षेत्र में नई संभावनायें देता है, नईसोच व कार्यशैली लाभकारी सिद्ध होगी, मांगलिक कार्यो पर विचार होगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी हो सकती है. आपसी मामले सावधानी से हल करें.